याकूब

1 याकूब का, जो परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का दास है, संतों के बारहों कुलों को नमस्कार पहुँचे जो समूचे संसार में फैले हुए हैं।

विश्वास और विवेक

2हे मेरे भाइयों, जब कभी तुम तरह तरह की परीक्षाओं में पड़ो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो। **3**क्योंकि तुम यह जानते हो कि तुम्हारा विश्वास जब परीक्षा में सफल होता है तो उससे धैर्यपूर्ण सहन शक्ति उत्पन्न होती है। **4**और वह धैर्यपूर्ण सहन शक्ति एक ऐसी पूर्णता को जन्म देती है जिससे तुम ऐसे सिद्ध बन सकते हो जिनमें कोई कमी नहीं रह जाती है। **5**सो यदि तुममें से किसी में विवेक की कमी है तो वह उसे परमेश्वर से माँग सकता है। वह सभी को प्रसन्नता पूर्वक उदारता के साथ देता है। **6**बस विश्वास के साथ माँगा जाये। थोड़ा सा भी संदेह नहीं होना चाहिये। क्योंकि जिसको संदेह होता है, वह सागर की उस लहर के समान है जो हवा से उठती है और थरथराती है। **7**ऐसे मनुष्य को यह नहीं सोचना चाहिये कि उसे प्रभु से कुछ भी मिल पायेगा। **8**ऐसे मनुष्य का मन तो दुविधा से ग्रस्त है। वह अपने सभी कर्मों में अस्थिर रहता है।

सच्चा धन

9साधारण परिस्थितियों वाले भाई को गर्व करना चाहिये कि परमेश्वर ने उसे आत्मा का धन दिया है। **10**और धनी भाई को गर्व करना चाहिये कि परमेश्वर ने उसे नम्रता दी है। क्योंकि उसे तो घास पर खिलने वाले फूल के समान झड़ जाना है। **11**सूरज कड़कड़ाती धूप लिये उगता है और पौधों को सुखा डालता है। उनकी फूल पत्तियाँ झड़ जाती हैं और सुन्दरता समाप्त हो जाती है। इसी प्रकारधनी व्यक्ति भी अपनी भाग दौड़ के साथ समाप्त हो जाता है।

परमेश्वर परीक्षा नहीं लेता

12वह व्यक्ति धन्य है जो परीक्षा में अटल रहता है क्योंकि परीक्षा में खरा उतरने के बाद वह जीवन के उस विजय मुकुट को धारण करेगा, जिसे परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों को देने का वचन दिया है।, **13**परीक्षा की घड़ी में किसी को यह नहीं कहना चाहिये कि "परमेश्वर मेरी परीक्षा ले रहा है।" क्योंकि बुरी बातों से परमेश्वर को कोई लेना देना नहीं है। वह किसी की परीक्षा नहीं लेता। **14**हर कोई अपनी ही बुरी इच्छाओं के भ्रम में फँस कर परीक्षा में पड़ता है। **15**फिर जब वह इच्छा गर्भवती होती है तो पाप पूरा बढ़ जाता है और वह मृत्यु को जन्म देता है।

16सो मेरे प्रिय भाइयों, धोखा मत खाओ। **17**प्रत्येक उत्तम दान और परिपूर्ण उपहार ऊपर से ही मिलते हैं। और वे उस परम पिता के द्वारा जिसने स्वर्गीय प्रकाश को जन्म दिया है, नीचे लाये जाते हैं। वह नक्षत्रों की गतिविधि से उत्पन्न छाया से कभी बदलता नही है। **18**सत्य के सुसंदेश के द्वारा अपनी संतान बनाने के लिये उसने हमें चुना। ताकि हम सभी प्राणियों के बीच उसकी फ़सल के पहले फल सिद्ध हों।

सुनना और उस पर चलना

19हे मेरे प्रिय भाइयों, याद रखो, हर किसी को तत्परता के साथ सुनना चाहिये, बोलने में शीघ्रता मत करो, क्रोध करने में उतावली मत बरतो। **20**क्योंकि मनुष्य के क्रोध से परमेश्वर की धार्मिकता नहींउपजती। **21**हर घिनौने आचरण और चारों ओर फैली दुष्टता से दूर रहो। तथा नम्रता के साथ तुम्हारे हृदयों में रोपे गये परमेश्वर के वचन को ग्रहण करो जो तुम्हारी आत्माओं को उद्धार दिला सकता है। **22**परमेश्वर की शिक्षा पर चलने वाले बनो, न कि केवल उसे सुनने वाले।यदि तुम केवल उसे सुनते भर हो तो तुम अपने आपको छल रहे हो। **23**क्योंकि यदि कोई परमेश्वर की शिक्षा को सुनता तो है और उस पर चलता नहीं है, तो वह उस पुरुष के समान ही है जो अपने भौतिक मुख को दर्पण में देखता भर है। **24**वह स्वयं को अच्छी तरह देखता है, पर जब वहाँ से चला जाता है तो तुरंत भूल जाता है कि वह कैसा दिख रहा था। **25**किन्तु जो परमेश्वर की उस सम्पूर्ण व्यवस्था को निकटता से देखता है, जिससे स्वतन्त्रता प्राप्त होती है और उसी पर आचरण भी करता रहता है, और सुन कर उसे भूले बिना अपने आचरण में उतारता रहता है, वही अपने कर्मों के लिये धन्य होगा।

भक्ति का सच्चा मार्ग

26यदि कोई सोचता है कि वह भक्त है और अपनी
जीभ पर कस कर लगाम नहीं लगाता तो वह धोखे में
है। उसकी भक्ति निरर्थक है। 27परम पिता परमेश्वर
के सामने सच्ची और शुद्ध भक्ति वही है जिसमें अनाथों
और विधवाओं की उनके दुःख दर्द में सुधि ली जाये
और स्वयं को कोई सांसारिक कलंक न लगने दिया
जाये।

सबसे प्रेम करो

2 हे मेरे भाइयो, हमारे महिमावान प्रभु यीशु मसीह में
जो तुम्हारा विश्वास है, वह पक्षपातपूर्ण न हो।
2कल्पना करो तुम्हारी सभा में कोई व्यक्ति सोने की
अँगूठी और भव्य वस्त्र धारण किये हुए आता है। और
तभी मैले कुचैले कपड़े पहने एक निर्धन व्यक्ति भी
आता है। 3और तुम जिसने भव्य वस्त्र धारण किये हैं,
उसको विशेष महत्त्व देते हुए कहते हो, "यहाँ इस उत्तम
स्थान पर बैठो", जबकि उस निर्धन व्यक्ति से कहते हो,
"वहाँ खड़ा रह" या "मेरे पैरों के पास बैठ जा।" 4ऐसा
करते हुए क्या तुमने अपने बीच कोई भेद-भाव नहीं
किया और बुरे विचारों के साथ न्यायकर्ता नहीं बन
गये?

5हे मेरे प्यारे भाइयो, सुनो क्या परमेश्वर ने संसार
की आँखों में उन निर्धनों को विश्वास में धनी और उस
राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में नहीं चुना, जिसका
उसने, जो उसे प्रेम करते हैं, देने का वचन दिया है।
6किन्तु तुमने तो उस निर्धन व्यक्ति के प्रति घृणा दर्शायी
है। क्या ये धनिक व्यक्ति वे ही नहीं हैं, जो तुम्हारा
शोषण करते है और तुम्हें कचहरियों में घसीट ले जाते
है? 7क्या ये वे ही नहीं हैं, जो मसीह के उस उत्तम नाम
की निन्दा करते हैं, जो तुम्हें दिया गया है?

8यदि तुम शास्त्र में प्राप्त होने वाली इस उच्चतम
व्यवस्था का सचमुच पालन करते हो, "अपने पड़ोसी से
वैसे ही प्रेम करो, जैसे तुम अपने आप से करते हो"*
तो तुम अच्छा ही करते हो। 9किन्तु यदि तुम पक्षपात
दिखाते हो तो तुम पाप कर रहे हो। फिर तुम्हें व्यवस्था
के विधान को तोड़ने वाला ठहराया जायेगा। 10क्योंकि
कोई भी यदि समग्र व्यवस्था का पालन करता है और
एक बात में चूक जाता है तो वह समूची व्यवस्था के
उल्लंघन का दोषी हो जाता है। 11क्योंकि जिसने यह
कहा था, "व्यभिचार मत करो"* उसी ने यह भी कहा
था, "हत्या मत करो।"* सो यदि तुम व्यभिचार नहीं
करते किन्तु हत्या करते हो तो तुम व्यवस्था को तोड़ने
वाले हो। 12तुम उन्हीं लोगों के समान बोलो और उनही
के जैसा आचरण करो जिनका उस व्यवस्था के अनुसार
न्याय होने जा रहा है, जिससे छुटकारा मिलता है। 13जो
दयालु नहीं है, उसके लिये परमेश्वर का न्याय भी बिना
दया के ही होगा। किन्तु दया न्याय पर विजयी है।

विश्वास और सत् कर्म

14हे मेरे भाइयो, यदि कोई व्यक्ति कहता है कि वह
विश्वासी है तो इसका क्या लाभ जब तक कि उसके
कर्म विश्वास के अनुकूल न हों? ऐसा विश्वास क्या
उसका उद्धार कर सकता है? 15यदि भाइयों और बहनों
को वस्त्रों की आवश्यकता हो, उनके पास खाने तक
को न हो 16और तुममें से ही कोई उनसे कहे "शांति से
जाओ, परमेश्वर तुम्हारा कल्याण करे, अपने को
गरमाओ तथा अच्छी प्रकार भोजन करो" और तुम
उनकी देह की आवश्यकताओं की वस्तुएँ उन्हें न दो
तो फिर इसका क्या मूल्य है? 17इसी प्रकार यदि विश्वास
के साथ कर्म नहीं है तो वह अपने आप में निष्प्राण है।

18किन्तु कोई कह सकता है, "तुम्हारे पास विश्वास
है, जबकि मेरे पास कर्म है अब तुम बिना कर्मों के
अपना विश्वास दिखाओ और मैं तुम्हें अपना विश्वास
अपने कर्मों के द्वारा दिखाऊँगा।" 19क्या तुम विश्वास
करते हो कि परमेश्वर केवल एक है? अद्भुत! दुष्टात्माएँ
यह विश्वास करती है कि परमेश्वर है और वे काँपती
रहती हैं।

20अरे मूर्ख! क्या तुझे प्रमाण चाहिये कि कर्म रहित
विश्वास व्यर्थ है? 21क्या हमारा पिता इब्राहीम अपने
कर्मों के आधार पर ही उस समय धर्मी नहीं ठहराया
गया था जब उसने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर
अर्पित कर दिया था? 22तू देख कि उसका वह विश्वास
उसके कर्मों के साथ ही सक्रिय हो रहा था। और
उसके कर्मो से ही उसका विश्वास परिपूर्ण किया गया
था। 23इस प्रकार शास्त्र का यह कहा पूरा हुआ था,
"इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और विश्वास
के आधार पर ही वह धर्मी ठहरा"* और इसी से वह
"परमेश्वर का मित्र"* कहलाया। 24तुम देखो कि केवल
विश्वास से नहीं, बल्कि अपने कर्मो से ही व्यक्ति धर्मी
ठहरता है।

25इसी प्रकार राहब वेश्या भी क्या उस समय अपने
कर्मों से धर्मी नहीं ठहरायी गयी, जब उसने दूतों को
अपने घर में शरण दी और फिर उन्हें दूसरे मार्ग से
कहीं भेज दिया।

26इस प्रकार जैसे बिना आत्मा का देह मरा हुआ है,
वैसे ही कर्म विहीन विश्वास भी निर्जीव है!

"अपने ... हो" लैव्य. 19:18

"व्यभिचार मत करो" निर्गमन 20:14; व्यवस्था. 5:18

"हत्या मत करो" निर्गमन 20:13; व्यवस्था. 5:17

"इब्राहीम ... ठहरा" उत्पत्ति 15:6

"परमेश्वर ... मित्र" 2 इति. 20:7; यशा. 41:8

वाणी का संयम

3 हे मेरे भाइयों, तुममें से बहुत से को शिक्षक बनने
की इच्छा नहीं करनी चाहिये। तुम जानते ही हो
कि हम उपदेशक का और अधिक कड़ाई के साथ
न्याय किया जायेगा। 2मैं तुम्हें ऐसे इसलिये चेता रहा हूँ
कि हम सबसे बहुत सी भूल होती ही रहती हैं। यदि कोई
बोलने में कोई भी चूक न करे तो वह एक सिद्ध व्यक्ति
है तो फिर ऐसा कौन है जो उस पर पूरी तरह काबू पा
सकता हैं? 3हम घोड़ों के मुँह में इसलिये लगाम लगाते हैं
कि वे हमारे बस में रहें। और इस प्रकार उनके समूचे
देह को हम वश में कर सकते हैं। 4अथवा जलयानों
का उदाहरण भी लिया जा सकता है। देखो, चाहे वे
कितने ही बड़े होते हैं और शक्तिशाली हवाओं द्वारा
चलाये जाते है, किन्तु एक छोटी सी पतवार से उनका
नाविक उन्हें जहाँ कहीं ले जाना चाहता है, उन पर
काबू पाकर उन्हें ले जाता है। 5इसी प्रकार जीभ, जो देह
का एक छोटा सा अंग है, बड़ी बड़ी बातें कर डालने की
डींगे मारती है।

अब तनिक सोचो एक जरा सी लपट समूचे जंगल को
जला सकती है। 6हाँ, जीभ: एक लपट है। यह बुराई का
एक पूरा संसार है। यह जीभ हमारे देह के अंगों में एक
ऐसा अंग है, जो समूचे देह को भ्रष्ट कर डालता है और
हमारे समूचे जीवन चक्र में ही आग लगा देता है। यह
जीभ नरक की आग से धधकती रहती है। 7देखो, हर
प्रकार के हिंसक पशु, पक्षी, रेंगने वाले जीव जंतु, पानी
में रहने वाले प्राणी मनुष्य द्वारा वश में किये जा सकते
हैं और किये भी गए हैं। 8किन्तु जीभ को कोई मनुष्य
वश में नहीं कर सकता। यह घातक विष से भरी एक
ऐसी बुराई है जो कभी चैन से नहीं रहती। 9हम इसी से
अपने प्रभु और परमेश्वर की स्तुति करते हैं और इसी
से लोगों को जो परमेश्वर की समरूपता में उत्पन्न किये
गये हैं, कोसते भी हैं। 10एक ही मुँह से आशीर्वाद और
अभिशाप दोनों निकलते हैं। मेरे भाइयों, ऐसा तो नहीं
होना चाहिये। 11सोते के एक ही मुहाने से भला क्या
मीठा और खारा दोनों तरह का जल निकल सकता है।
12मेरे भाइयो, क्या अंजीर के पेड़ पर जैतून या अंगूर
की लता पर कभी अंजीर लगते हैं? निश्चय ही नहीं।
और न ही खारे स्रोत से कभी मीठा जल निकल पाता
है।

सच्चा विवेक

13भला तुममें, ज्ञानी और समझदार कौन है? जो है,
उसे अपने व्यवहार से यह दिखाना चाहिये कि उसके
कर्म उस सज्जनता के साथ किये गये हैं जो ज्ञान से
जुड़ी है। 14किन्तु यदि तुम लोगों के हृदयों में भयंकर
ईर्ष्या और स्वार्थ भरा हुआ है, तो अपने ज्ञान का ढोल
मत पीटो। ऐसा करके तो तुम सत्य पर पर्दा डालते हुए
असत्य बोल रहे हो। 15ऐसा “ज्ञान” तो ऊपर अर्थात्
स्वर्ग से, प्राप्त नहीं होता, बल्कि वह तो भौतिक है।
आत्मिक नहीं है। तथा शैतान का है। 16क्योंकि जहाँ
ईर्ष्या और स्वार्थ पूर्ण महत्वकाँक्षाएँ रहती हैं, वहाँ
अव्यवस्था और हर प्रकार की बुरी बातें रहती हैं।
17किन्तु स्वर्ग से आने वाला ज्ञान सबसे पहले तो पवित्र
होता है, फिर शांतिपूर्ण, सहनशील, सहज-प्रसन्न,
करुणापूर्ण होता है। और उससे उत्तम कर्मों की फ़सल
उपजती है। वह पक्षपात-रहित और सच्चा भी होता है।
18शांति के लिए काम करने वाले लोगों को ही धार्मिक
जीवन का फल प्राप्त होगा यदि उसे शांतिपूर्ण वातावरण
में बोया गया है।

परमेश्वर को समर्पित हो जाओ

4 तुम्हारे बीच लड़ाई-झगड़े क्यों होते हैं? क्या उनका
कारण तुम्हारे अपने ही भीतर नहीं है? तुम्हारी वे
भोग-विलासपूर्ण इच्छाएँ ही जो तुम्हारे भीतर निरन्तर
द्वन्द्व करती रहती हैं, क्या उन्हीं से ये पैदा नहीं होते?
2तुम लोग चाहते तो हो किन्तु तुम्हें मिल नहीं पाता। तुम
में ईर्ष्या है और तुम दूसरों की हत्या करते हो, फिर भी
जो चाहते हो, प्राप्त नहीं कर पाते। और इसीलिये लड़ते
झगड़ते हो। अपनी इच्छित वस्तुओं को तुम प्राप्त नहीं
कर पाते क्योंकि तुम उन्हें परमेश्वर से नहीं माँगते।
3और जब माँगते भी हो तो तुम्हारा उद्देश्य अच्छा नहीं
होता। क्योंकि तुम उन्हें अपने भोग-विलास में ही उड़ाने
को माँगते हो। 4अरे, विश्वास विहीन लोगो! क्या तुम
नहीं जानते कि संसार से प्रेम करना परमेश्वर से घृणा
करने जैसा ही है? जो कोई इस दुनिया से दोस्ती रखना
चाहता है, वह अपने आपको परमेश्वर का शत्रु बनाता
है। 5अथवा क्या तुम ऐसा सोचते हो कि शास्त्र ऐसा
व्यर्थ में ही कहता है कि, “परमेश्वर ने हमारे भीतर जो
आत्मा दी है, वह ईर्ष्या पूर्ण इच्छाओं से भरी रहती है।”
6किन्तु परमेश्वर ने हम पर अत्यधिक अनुग्रह दर्शाया
है, इसीलिए शास्त्र में कहा गया है, “परमेश्वर अभिमानियों
का विरोधी है, जबकि दीन जनों पर अपनी अनुग्रह
दर्शाता है।”* 7इसीलिए अपने आपको परमेश्वर के
अधीन कर दो। शैतान का विरोध करो, वह तुम्हारे
सामने से भाग खड़ा होगा। 8परमेश्वर के पास आओ,
वह भी तुम्हारे पास आयेगा। अरे पापियो! अपने हाथ
शुद्ध करो और अरे सन्देह करने वालो, अपने हृदयों
को पवित्र करो। 9शोक करो, विलाप करो और दुःखी
होओ। हो सकता है तुम्हारे ये अट्टहास शोक में बदल
जायें और तुम्हारी यह प्रसन्नता विषाद में बदल जाये।
10प्रभु के सामने दीन बनो। वह तुम्हें ऊँचा उठायेगा।

“परमेश्वर ... है” नीति. 3:34

न्यायकर्त्ता तुम नहीं हो

11हे भाइयो, एक दूसरे के विरोध में बोलना बंद
करो। जो अपने ही भाई के विरोध में बोलता है, अथवा
उसे दोषी ठहराता है, वह व्यवस्था के ही विरोध में
बोलता है और व्यवस्था को दोषी ठहराता है। और यदि
तुम व्यवस्था पर दोष लगाते हो तो व्यवस्था के विधान
का पालन करने वाले नहीं रहते वरना उसके न्यायकर्त्ता
बन जाते हो। 12व्यवस्था के विधान को देने वाला और
उसका न्याय करने वाला तो बस एक ही है। और वही
रक्षा कर सकता है और वही नष्ट करता है। तो फिर
अपने साथी का न्याय करने वाले तुम कौन होते हो?

अपना जीवन परमेश्वर को चलाने दो

13ऐसा कहने वालो सुनो, "आज या कल हम इस या
उस नगर में जाकर साल–एक भर वहाँ व्यापार में धन
लगा बहुत सा पैसा बना लेंगे।" 14किन्तु तुम तो इतना भी
नहीं जानते कि कल तुम्हारे जीवन का क्या बनेगा!
देखो, तुम तो उस धुंध के समान हो जो थोड़ी सी देर को
उठती है और फिर खो जाती है। 15सो इसके स्थान पर
तुम्हें तो सदा यही कहना चाहिये, "यदि प्रभु ने चाहा तो
हम जीयेंगे और यह या वह करेंगे।" 16किन्तु स्थिति तो
यह है कि तुम तो अपने आडम्बरों के लिये स्वयं पर
गर्व करते हो। ऐसे सभी गर्व बुरे हैं। 17तो फिर यह जानते
हुए भी कि यह उचित है, उसे नहीं करना पाप है।

स्वार्थी धनी दण्ड के भागी होंगे

5 धनवानो सुनो, जो विपत्तियाँ तुम पर आने वाली हैं,
उनके लिये रोओ और ऊँचे स्वर में विलाप करो।
2तुम्हारा धन सड़ चुका हैं। तुम्हारी पोशाकें कीड़ों द्वारा
खा ली गयी हैं। 3तुम्हारा सोना चाँदी जंग लगने से बिगड़
गया है। उन पर लगी जंग तुम्हारे विरोध में गवाही देगी
और तुम्हारे मांस को अग्नि की तरह चट कर जायेगी।
तुमने अपना खजाना उस आयु में एक ओर उठा कर
रख दिया है जिसका अंत आने को है। 4देखो, तुम्हारे
खेतों में जिन मजदूरों ने काम किया, तुमने उनका
मेहनताना रोक रखा है। वही मेहनताना चीख पुकार
कर रहा है और खेतों में काम करने वालों की वे चीख
पुकारें सर्वशक्तिमान प्रभु के कानों तक जा पहुँची हैं।
5धरती पर तुमने विलासपूर्ण जीवन जीया है और अपने
आपको भोग–विलासों में डुबोये रखा है। इस प्रकार
तुमने अपने आपको वध किये जाने के दिन के लिये
पाल–पोसकर हृष्ट–पुष्ट कर लिया है। 6तुमने भोले
लोगों को दोषी ठहराकर उनके किसी प्रतिरोध के
अभाव में ही उनकी हत्याएँ कर डालीं।

धैर्य रखो

7इसलिए भाइयो, प्रभु के फिर से आने तक धीरज
धरो। उस किसान का ध्यान धरो जो अपनी धरती की
मूल्यवान उपज के लिये बाट जोहता रहता है। इसके
लिये वह आरम्भिक वर्षा से लेकर बाद की वर्षा तक
निरन्तर धैर्य के साथ बाट जोहता रहता है। 8तुम्हें भी
धैर्य के साथ बाट जोहनी होगी। अपने हृदयों को दृढ़
बनाये रखो क्योंकि प्रभु का दुबारा आना निकट ही है।
9हे भाइयों, आपस में एक दूसरे की शिकायतें मत करो
ताकि तुम्हें अपराधी न ठहराया जाये। देखो, न्यायकर्त्ता
तो भीतर आने के लिये द्वार पर ही खड़ा है। 10हे
भाइयों, उन भविष्यवक्ताओं को याद रखो जिन्होंने प्रभु
के लिये बोला। वे हमारे लिए यातनाएँ झेलने और धैर्य
पूर्ण सहनशीलता के उदाहरण हैं। 11ध्यान रखना, हम
उन की सहनशीलता के कारण उनको धन्य मानते हैं।
तुमने अय्यूब के धीरज के बारे में सुना ही है और प्रभु
ने उसे उसका जो परिणाम प्रदान किया, उसे भी तुम
जानते ही हो कि प्रभु कितना दयालु और करुणापूर्ण है।

सोच विचार कर बोलो

12हे मेरे भाइयो, सबसे बड़ी बात यह है कि स्वर्ग की
अथवा धरती की या किसी भी प्रकार की कसमें खाना
छोड़ो। तुम्हारी "हाँ", हाँ होनी चाहिये, और "ना" ना
होनी चाहिये। ताकि तुम पर परमेश्वर का दण्ड न पड़े।

प्रार्थना की शक्ति

13यदि तुममें से कोई विपत्ति में पड़ा है तो उसे प्रार्थना
करनी चाहिये और यदि कोई प्रसन्न है तो उसे स्तुति–गीत
गाने चाहिये। 14यदि तुम्हारे बीच कोई रोगी है तो उसे
कलीसिया के अगुवाओं को बुलाना चाहिये कि वे उसके
लिये प्रार्थना करें और उस पर प्रभु के नाम में तेल मलें
15विश्वास के साथ की गयी प्रार्थना से रोगी निरोग होता
है। और प्रभु उसे उठाकर खड़ा कर देता है। यदि उसने
पाप किये हैं तो प्रभु उसे क्षमा कर देगा। 16इसलिये
अपने पापों को परस्पर स्वीकार और एक दूसरे के
लिए प्रार्थना करो ताकि तुम भले चंगे हो जाओ। धार्मिक
व्यक्ति की प्रार्थना शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण होती है।
17नबी एलिय्याह एक मनुष्य ही था ठीक हमारे जैसा।
उसने तीव्रता के साथ प्रार्थना की कि वर्षा न हो और
साढ़े तीन साल तक धरती पर वर्षा नहीं हुई। 18उसने
फिर प्रार्थना की और आकाश में वर्षा उमड़ पड़ी तथा
धरती ने अपनी फसलें उपजायीं।

एक आत्मा की रक्षा

19हे मेरे भाइयो, तुम में से कोई यदि सत्य से भटक
जाये और उसे कोई फिर लौटा लाये तो उसे यह पता
होना चाहिये कि 20जो किसी पापी को पाप के मार्ग से
लौटा लाता है वह उस पापी की आत्मा को अनन्त मृत्यु
से बचाता है और उसके अनेक पापों के क्षमा किये
जाने का कारण बनता है।